12 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

वर्तमान के राज्य अलंकारी स्वरुप का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा शिव पिता की सन्तान

➳_ ➳ मास्टर बीज रूप हूँ

→ आधार मूर्त हूँ

→ श्रेष्ठ आत्मा हूँ

→ वृक्ष की आधार मूर्त कलम हूँ

◆ बाबा के दिव्य कर्तव्य में

◆ साथी हूँ

◆ सहयोगी हूँ

• बाबा का विशेष स्नेह

• मुझ आत्मा पर बरस रहा है

➳_ ➳ मीठे बाबा ने

→ मुझे अविनाशी खजाने

→ अविनाशी प्राप्तिया कराई हैं

◆ मेरे मुख से मेरा बाबा

◆ के ही बोल निकल रहे हैं

➳_ ➳ मैं स्व परिवर्तन से

➳_ ➳ विश्व परिवर्तन करने वाली

➳_ ➳ जिम्मेवार आत्मा हूँ

→ जिम्मेवारी के ताज्धारी सो

→ विश्व राज्य के

→ ताज की अधिकारी आत्मा हूँ

◆ मैं अपने संगम युगी ब्राह्मण जन्म

◆ और भविष्य देवता स्वरूप

◆ दोनों को देख रही हूँ

➳_ ➳ अपने ब्राह्मण जीवन में

➳_ ➳ मैं देख रही हूँ

→ अपने पढाई के

→ और सेवा के

→ दोनों ताज को

◆ मैं आत्मा निरंतर

◆ अकाल तख़्त पर आसीन हूँ

- ◆ मैं अपने शिव साजन की
- ◆ अविनाशी सुहागिन हूँ
- ◆ इस सुहाग का
- ◆ और इश्वर की सन्तान का
- ◆ अविनाशी तिलक
- ◆ मैंने धारण कर रखा है

➳_ ➳ मैं आत्मा मीठे बाबा से

➳_ ➳ मंगल मिलन मना रही हूँ

→ मैंने तन से

→ मन से

→ धन से

→ स्वयम को सेवा प्रति

→ समर्पित कर दिया है

- ◆ मेरे मन में सदा
- ◆ सभी के लिए
- ◆ शुभ भावना
- ◆ और श्रेष्ठ कामना ही है
- ◆ सर्व के कल्याण की ही वृत्ति है

➳_ ➳ मैं निस्वार्थ सेवाधारी आत्मा हूँ

→ बेहद की सेवाधारी हूँ

- ◆ मेरा संगम युगी स्वरुप
- ◆ मेरे भविष्य प्रालब्ध का आधार बन रहा है

➳_ ➳ मैं आत्मा हर समय सेवा के

➳_ ➳ उमंग में रहती हूँ

→ मैं वर्तमान की राज्य अलंकारी आत्मा हूँ

- ◆ श्रेष्ठ आत्मा हूँ
- ◆ सदा काल की सुहागिन हूँ
- ◆ श्रेष्ठ भाग्यवान हूँ